अनुष्टुप छन्द

Name - [illegible]
class - B.A III year
Deptt - Samskrit

लक्षण :— पादे षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्
द्विचतुष्पादयो ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

यह छन्द एक मानक छन्द माना जाता यह एक वार्णिक छन्द है जिसमें प्रत्येक चरण में 8 वर्ण होते है। सर्वप्रथम अनुष्टुप छन्द की प्रयोग आर्ष काव्यों में किया गया। रामायण, महाभारत आदि।
जो इस छन्द के चारों चरणों में पाँचवाँ वर्ण लघु (ह्रस्व), छठवाँ अक्षर गुरु (दीर्घ) होता है, पहले और तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण दीर्घ (गुरु), तथा दूसरे एवं चौथे चरण में सातवाँ अक्षर ह्रस्व (लघु) होते है। इस छन्द को पद्य या श्लोक भी कहते है पदान्त यति होती है।

① उदा० — मा निषाद प्रतिष्ठां त्वम् अगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।

2 उदा० ① — शैले शैले न माणिक्यं
I S S

6 - $\frac{1}{3}$ |7| - दीर्घ
5 - $\frac{2}{4}$ (7) - लघु

② मौक्तिकं न गजे गजे।
I S I

③ साधवो नहि सर्वत्र
I S S

④ चन्दनं न वने वने ॥
I S I

शिखरिणी

Name:- Soni Kumari
class:- BA III year
Dept.- Sanskrit

लक्षण :— रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनस भला गः शिखरिणी ।
6 11

अर्थ :— इस शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, एक लघु और एक गुरु होते है तथा कुल वर्ण 17 होते हैं। पाद के 6 वें वर्ण तथा अन्तिम 11 वें वर्ण पर यति होती है।

उदा० —

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
ISS SSS III IIS SII IS
यगण मगण नगण सगण भगण लघु, गुरु
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम् ।
ISS SSS III IIS SII IS
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
ISS SSS III IIS SII IS
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ॥
ISS SSS III IIS SII IS

लय [ननाना नानाना, ननन ननना नानन ननना]